Topic – Cannon-Bard Theory of Emotion.
Or Hypothalamic Theory of Emotion.

विदित है कि संवेगात्मक अनुभूति तथा संवेगात्मक व्यवहार के बीच के सम्बन्धों के बारे में मनोवैज्ञानिकों में एक मत नहीं है यही कारण है कि संवेगात्मक अनुभूति तथा संवेगात्मक व्यवहार के बीच के सम्बन्धों की व्याख्या के सन्दर्भ में विभिन्न मनोवैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न प्रकार के सिद्धान्तों का प्रतिपादन किये हैं।

संवेग के सम्बन्ध में Cannon-Bard Theory of Emotion अथवा Hypothalamic Theory of Emotion का प्रतिपादन, James-Lange के संवेग के उपरोक्त प्रतिपादित सिद्धान्त के विरोध में हुआ। Cannon महोदय ने जेम्स-लांजे सिद्धान्त को नकारते हुए एक नया सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। Cannon के अनुसार संवेग में मस्तिष्क के विभिन्न भागों के सक्रियता के कारण ही संवेग की अनुभूति होती है। उन्होंने संवेग के लिए Thalamus को केन्द्र माना है जो कि मस्तिष्क का एक अत्यंत महत्वपूर्ण भाग है। इसी लिए इसे Thalamic Theory कहा जाता है। (Head) हेड के प्रयोगात्मक अध्ययन से भी इस सिद्धान्त को लाभ मिला है। बाद ही बाद इस सिद्धान्त का समर्थन Bard के प्रयोगात्मक अध्ययन के परिणामों से हुआ है। इसी लिए यह सिद्धान्त Cannon-Bard Theory of Emotion के नाम से जाना जाता है।

Cannon तथा Bard के इस सिद्धान्त के अनुसार Thalamus तथा Hypothalamus अग्रमस्तिष्क का मुख्य भाग है। Cortex की ओर जाने वाला सभी तंत्रिका आवेग पहले Thalamus में जाते हैं और फिर वहाँ से उचित स्थानों को भेजे जाते हैं। Thalamus के नीचे तंत्रिकाओं का एक समूह है जिसे Hypothalamus कहा जाता है। Hypothalamus

शेष पेज 2 पर

अधमस्तिष्क तंत्र (Limbic System) का एक महत्वपूर्ण भाग है। सभी प्रकार के स्वतःसंचालित तंत्रिका तंत्र (Autonomic Nervous System) का संचालन एवं नियंत्रण Hypothalamus द्वारा ही होता है। Bard ने अपने प्रयोगात्मक अध्ययन में पाया कि यदि Hypothalamus को क्षतिग्रस्त कर दिया जाता है तो संवेगात्मक अनुभूति नहीं होता है। इसी परिणाम के आधार पर Cannon का Thalamic Theory Hypothalamus Theory of Emotion के रूप में अथवा Cannon-Bard Theory of Emotion के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

संवेग से सम्बन्धित Cannon-Bard के सिद्धान्त को पार्श्व के रेखाचित्र द्वारा विस्तार से समझा जा सकता है। इस सिद्धान्त के अनुसार ग्राहक कोशिका में उत्पन्न तंत्रिका आवेग मार्ग 1 से Hypothalamus में पहुँचता है वहाँ पर विशिष्ट क्रियाएँ उत्पन्न करता है और मार्ग 1 के द्वारा ही Cortex में पहुँचकर Hypothalamus की क्रियाओं पर से cortex के अवरोध को हटाने के लिए मार्ग 3 से Motor Impulse गति आवेग भेजता है। मार्ग 1 से आते हुए संवेदी आवेग (Sensory Impulse) द्वारा या मार्ग 3 से आते हुए गति आवेग द्वारा Hypothalamus में ऐसे गति आवेग उत्पन्न होते हैं जो मार्ग 2 से अन्तरावयवों या मांसपेशियों में पहुँचकर उनकी क्रियाओं में उपद्रव उत्पन्न करते हैं, मार्ग 2 से गति आवेग भेजने के साथ ही Hypothalamus संवेदी आवेग मार्ग चार) 4

शेष पेज 3 पर

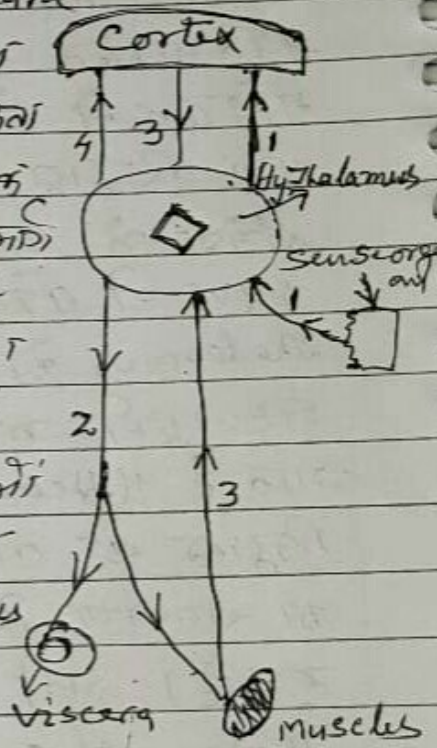

से Cortex में भेज देता है। इस प्रकार इन आंतरिक अंगों से उत्पन्न संवेदी आवेग मार्ग 3 से Hypothalamus होते हुए Cortex में पहुँचता है।

इस प्रकार संवेग से सम्बन्धित Cannon-Bard सिद्धान्त के अनुसार Hypothalamus अपने विशेष क्रियाओं के द्वारा गति-आवेग को अन्तरंगों एवं मांसपेशियों में मार्ग 2 से भेजता है और उसी समय संवेदी आवेग मार्ग 4 से Cortex में जाता है जो संवेगात्मक होता है। इस प्रकार संवेगात्मक अनुभूति और संवेगात्मक व्यवहार एक ही साथ में होता है। परन्तु संवेग उत्पन्न करने वाले कुछ विचार आदि से भी Cortex में गति-आवेग उत्पन्न होकर Hypothalamus में आते हैं ये मार्ग 3 से आते हैं। अतः यह सिद्धान्त Hypothalamus को ही संवेग का केन्द्र मानता है। उसके लिए यह सिद्धान्त कुछ प्रमाण भी प्रस्तुत करता है।

(i) इस सिद्धान्त का पहला प्रमाण यह है कि सभी प्रवेशी संवेदी आवेग तथा निर्गामी गति आवेग पहले Hypothalamus में ही आते हैं।

(ii) दूसरा प्रमाण यह है कि Hypothalamus के द्वारा ही स्वतःसंचालित तंत्र का संचालन एवं नियंत्रण होता है, इनके क्रियाओं का संवेग में महत्वपूर्ण स्थान होता है।

(iii) तीसरा प्रमाण यह है कि Hypothalamus के विद्युत उत्तेजन से संवेग जैसी क्रियाएँ उत्पन्न होती हैं और इसे क्षतिग्रस्त होने से संवेगात्मक अनुभूति नहीं होती है।

—Cannon-Bard द्वारा प्रतिपादित संवेग से सम्बन्धित Hypothalamus सिद्धान्त अपने अनुकूल प्रमाणों के बावजूद भी अपने आपको आलोचनाओं से वंचित नहीं रख पाया। इस सिद्धान्त की निम्नलिखित आलोचनाएँ की गई हैं। :—

1. Lashley के अनुसार Hypothalamus या Thalamus में इतनी क्षमता के प्रमाण नहीं मिलते हैं जिनके आधार पर कहा जा सकता है कि Hypothalamus के द्वारा संवेगात्मक प्रतिक्रियाओं के सभी प्रतिरूप

शेष पृष्ठ-4 पर

और इनसे सैकड़ों प्रकार के संवेगात्मक अनुभव भी उत्पन्न हो सकते हैं। Lashley ने यह भी कहा कि संवेगात्मक तनाव अधिक देर तक रहते हैं और Hypothalamus तनावों को अधिक समय तक बनाये रखने की क्षमता नहीं रखता है।

2. Lindsley के अनुसार Cannon-Bard यह दावा नहीं करते हैं कि उनका सिद्धान्त संवेग के सभी प्रकारों की व्याख्या करने में सक्षम है। Cannon-Bard अपने सिद्धान्त में यह स्पष्ट नहीं कर सके कि प्रवेशी आवेगों के अन्तर स्थापित करने की क्रिया Hypothalamus में कैसे होती है। कौन सी क्रिया तटस्थ उद्दीपन से उत्पन्न हुआ और कौन भय या क्रोध उत्पन्न करने वाले उद्दीपन हैं, इस प्रकार Lindsley का मत है कि Cannon-Bard सिद्धान्त का मूल ढाँचा रखा जा सकता है परन्तु इसमें मस्तिष्क तथा अन्य तंत्रों के सम्बन्ध नयी खोजों की व्याख्या का कौशल के उचित संशोधनों कर मना होगा।

3. Arnold ने इस सिद्धान्त की आलोचना करते हुए सप्रमाण दावा किया कि क्रोध में परानुकम्पी क्रियाओं की प्रधानता रहती है और भय में अनुकम्पी क्रियाओं का। उनके अनुसार उल्लास और उत्तेजना के साथ सहानुकम्पी तंत्र की साधारण क्रिया रहती है। वस्तुतः केन्द्रीय और परिधीय तंत्रिका-तंत्र के बढ़ते हुए ज्ञान के साथ-साथ कैनन-बार्ड सिद्धान्त की मान्यता कम होती गई।

Cannon-Bard द्वारा प्रतिपादित Hypothalamic Theory of Emotion के विरुद्ध आलोचकों द्वारा उठाई गई आपत्तियों के बावजूद किसी भी आलोचकों द्वारा इस सिद्धान्त के आधार को अस्वीकार नहीं किया गया है।